E Content for student of patliputra University

B. A.(Hons),part 2,paper 4

Subject - philosophy

Title/Heading Of Topic--"लाइबनिट्ज का चिदणुवाद"

---डॉ.राज नारायण सिंह,आसिस्टेन्ट प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग,आर. आर. एस. कॉलेज मोकामा, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय

लाइबनिट्ज का द्रव्य सिद्धांत चिदणुवाद कहलाता है, क्योंकि चिदणु हीं द्रव्य है। चिदणु ही जगत के मूल कारण है। ये अचेतन अणुरूप नहीं, वरन् चेतन शक्ति रूप है। संसार का प्रत्येक पदार्थ इन्हीं सरल शक्तिरूप तत्वों का संघात है।

चिदणु विश्व के अंतिम अविभाज्य अवयव हैं। परमाणुवादी परमाणु को अंतिम अविभाज्य तत्व मानते हैं, जो भौतिक है। लाइबनिट्ज के अनुसार परमाणु चेतन है, क्योंकि ये अभौतिक है।

लाइबनिट्ज के चिदणु शक्ति रुप है। विश्व के सभी पदार्थ इस मौलिक शक्ति के परिणाम हैं।

लाइबनिट्ज के अनुसार चिदणु एक नहीं अनेक हैं।

लाइबनिट्ज के अनुसार चिदणु चेतन हैं। विश्व अनेक चेतन परमाणुओं से भरा है। प्रत्येक चिदणु अपने आप में व्यक्ति विशेष हैं। चिदणु की विशिष्टता उसकी स्वगत चेतना से सिद्ध होती है। जाति रूप सभी चिदणु समान हैं, परंतु स्वगत चेतना के कारण उनमें भेद हैं। इस प्रकार चिदणु में संख्यात्मक तथा गुणात्मक दोनों भेद है।

चेतना के आधार पर चिदणुओं की पांच श्रेणी है-

1. **अचेतन चिदणु -** अचेतन का अर्थ चेतना का नितस्त अभाव नहीं, वरन् चेतना की न्यूनतम मात्रा है। चिदणु कि यह न्यूनतम श्रेणी है। लाइबनिट्ज इसे सरल या नग्न चिदणु का स्तर कहते हैं। यह जड़ जगत है।
2. **उपचेतन चिदणु -** इस स्तर पर चेतना स्वप्नवस्थिति जैसी है। यह पशु जगत तथा वनस्पति जगत की अवस्था है।

3. **चेतन चिदणु-** इस स्तर पर चेतना जाग्रत अवस्था में रहती है। यहाँ प्राणी को प्रत्याक्षात्मक ज्ञान होता है तथा उसे अहं बोध (Self consciousness) रहता है। यह मानव का स्तर है।
4. **स्वचेतन चिदणु -** इस स्तर पर भी चेतना जाग्रत ही रहती है, यह भी मानव जगत का ही स्तर है।
5. **पूर्ण चेतन चिदणु -** पूर्ण चेतन स्तर ईश्वर का है। ईश्वर ही पूर्ण चेतन है।

- **चिदणु का स्वभाव :-**

लाइबनिट्ज के अनुसार विश्व में असंख्य चिदणु हैं। प्रत्येक चिदणु चित्त है तथा शक्तिमान विशेष है। प्रत्येक चिदणु अन्य को अपने भीतर प्रतिबिंबित करते हैं।

इस प्रकार प्रत्येक व्यक्तिगत चिदणु में सभी चिदणु विद्यमान हैं। लाइबनिट्ज के अनुसार प्रत्येक चिदणु में सम्पूर्ण विश्व का इतिहास देखा जा सकता है। इसी कारण चिदणु को संसार का लघु रूप माना गया है। अणु में विराट समाहित है।

प्रत्येक चिदणु गवाक्षहीन हैं। अर्थात प्रत्येक चिदणु बाह्य प्रभाव से रहित है। प्रत्येक चिदणु अपने

आप मे पूर्ण है। वह दूसरे चिदणु से प्रभावित नहीं होता है। प्रत्येक चिदणु स्वतंत्र है तथा व्यक्तिगत रूप से पूरे विश्व को प्रतिबिंबित करता है। कोई चिदणु स्पष्ट ढंग से तथा कोई चिदणु अस्पष्ट ढंग से प्रतिबिंबित करता है। जो स्पष्ट ढंग से प्रतिबिंबित करता है वह अधिक सक्रिय माना गया है।

------:o:-----